अन्तरराष्ट्रीय मार्क्सवादी-मानववादी संगठन का संविधान

सिद्धांतों का विवरण

अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवादी-मानववादी संगठन (IMHO) का लक्ष्य है पूंजीवाद के एक कारगर विकल्प की खोज, एक नए मानव समाज की संकल्पना को परियोजित एवं विकसित करना–- जो आज के मुक्ति-संघर्षों को दिशा दे सके. IMHO उस अनोखे दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसने 1950 में राया दुनेव्स्काया के द्वारा मार्क्सवाद-मानववाद के प्रस्थापन के समय से ही इस परियोजना को दिशा प्रदान की है. इस काम को हम सिद्धांत एवं व्यवहार, मजदूर एवं बुद्धिजीवी, तथा दर्शन एवं संगठन की एकता के जरिये आगे बढ़ा रहें हैं.

पूंजीवाद के विकल्प का अर्थ है मूल्य के लिए उत्पादन की समाप्ति, एक मानवीय उत्पादन पद्धति का विकास, एक राज्यहीन स्वरूप के शासन-व्यवस्था की स्थापना एवं स्वतंत्र रूप से संलग्न (associated) मानवीय संबंधों का निर्माण. एक वास्तविक रूप में नए समाज के गठन की संभावना के लिए 'मूल्य का नियम' (Law of value) के साथ विच्छेद आवश्यक शर्त है, क्योंकि मूल्य-उत्पादन मानव को वस्तुओं के अधीन कर देता है एवं मानवीय संबंधों को विकृत कर देता है. 'मूल्य-उत्पादन मुक्त' एक विकल्प की संकल्पना आज हमें करनी है.

राज्य-पूंजीवाद (जिसने अपने आप को साम्यवाद घोषित कर रखा था) के पतन के बाद, एवं क्योंकि यह धारणा बाकी लोगों के साथ-साथ वामपन्थियों में भी घर कर गई थी कि पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है-- आज यह और अधिक आवश्यक हो गया है कि हम अपने तमाम बौद्धिक संसाधनों को इकठ्ठा कर पूंजीवाद का एक विकल्प प्रस्तुत करें. 'पूंजीवाद-पश्चात' (post capitalist) समाज में जो आवश्यक तथा संभव है उसे आकार देना मार्क्सवाद का ऐतिहासिक कार्य है, जिसे संपन्न करना बाकी है.

1841 से 1883 तक अपने सम्पूर्ण रूप में विकसित मार्क्सवाद इस विकल्प को प्रस्तुत करने का आधार प्रदान करता है. हमारा नजरिया मार्क्स के 1844 के मानववादी प्रबंधों में वर्णित शुरूआती दार्शनिक दृष्टिकोण, विशेष रूप में "एक

गतिशील सृजनशील सिद्धांत" के रूप में "नकारात्मकता के द्वंदवाद"(dialectics of negativity) एवं साथ ही उनकी राजनीतिक अर्थशास्त्र एवं मूल्य-स्वरुप के उत्पादन की सम्पूर्ण आलोचना अर्थात कम्युनिस्ट घोषणा पत्र (1848),ग्रुन्द्रिस्से (1857-1858) एवं पूंजी (1867-1872) पर आधारित है. साथ ही हम अपने आप को मार्क्स के द्वारा जिंदगी के आखरी दिनों में लिखित जेंडर एवं गैर-यूरोपियन समाजों पर बहु- सांस्कृतिक (multicultural) लेखों पर आधारित करते हैं, विशेष रूप में उनकी नृजातिविज्ञान नोटबुक (ethnological notebooks) पर. मार्क्स के नए समाज की संकल्पना हमे "गोथा कार्यक्रम की आलोचना"(1875), "पूंजी" एवं "फ्रांस में गृहयुद्ध"(1871) में दिखाई देती है जो भविष्य का एक गैर-राज्यीय, मुक्त समाज का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है एवं वहां पहुँचने के मार्ग का संकेत भी देता है. हम समझते हैं कि इसी सवाल से अविभाज्य रूप से जुड़ा है मार्क्स का सांगठनिक व्यवहार एवं सिद्धांत, विशेष रूप से गोथा कार्यक्रम की आलोचना में, जो आज संगठन के बारे में महत्वपूर्ण आधारशिला प्रस्तुत करता है. हम मानते हैं कि हर नई पीढ़ी को अपने समय के लिए 'मार्क्स के मार्क्सवाद' का अर्थ खोज निकालना है. जैसे कि 'मार्क्सवाद-मानववाद' की प्रस्थापिका राया दुनेव्स्काया ने लिखा है: "मार्क्स की विरासत केवल एक संपत्ति मात्र नहीं है, बल्कि विचारों एवं परिप्रेक्ष्य की एक सजीव काया है जिसे ठोस रूप देने की आवश्यकता है. मार्क्स के विचारों का हर पड़ाव एवं उनकी सम्पूर्ण कृति 'स्थायी क्रांति' (Revolution in Permanence) की आवश्यकता की व्याख्या करती है. यह हमारे युग की परम चुनौती है."

पिछली आधी शताब्दी से भी अधिक समय से मार्क्सवादी-मानववाद का ऐतिहासिक-दार्शनिक योगदान इस गंभीर चुनौती का सामना करने के लिए दिशा प्रदान कर रहा है. हमने सभी स्वरूपों में पूंजीवाद का विरोध किया है, जिनमें तमाम राज्य-पूंजीवादी शासन-व्यवस्थाएं शामिल हैं, जिन्होंने अपने आप को साम्यवादी घोषित कर रखा था. हमने 1955-56 की मोंट्गोमेरी बस बहिष्कार का समर्थन किया था और साथ ही 1956 की हंगेरियन मजदूरों की परिषदों (councils) का भी जश्न मनाया था. हमने साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं नव-उपनिवेशवाद का विरोध किया है जो आज अमेरिका के द्वारा छेड़े गए युद्धों एवं लड़ाकू साजोसामान के फैलाव के जरिये दुनिया के हर कोने में पहुँच चुका है--- विएतनाम युद्ध से लेकर निकारागुआ युद्ध के खिलाफ कॉण्ट्रा युद्ध तक. हमने अतीत में राष्ट्रों के आत्म-निर्णय का अधिकार एवं आम जनता के मुक्ति-युद्धों का समर्थन किया है एवं आज भी एकल-पार्टी कम्युनिस्ट राज्यों के भीतर इन संघर्षों का खुलकर समर्थन कर रहें हैं.

क्योंकि हमने 1979 की ईरानी क्रांति का समर्थन करते हुए भी इस क्रांति से उभरे स्त्री विरोधी, युवा-वर्ग विरोधी, मजदूर-विरोधी मूलतत्ववादी शासन की निंदा की थी, हमने 2009-10 में ईरान में आम जनवादी उभार का समर्थन किया. हमने 2011 की अरब क्रान्तियों का भी समर्थन किया था और साथ ही हमने अंदरूनी विरोधों से उत्पन्न खतरों एवं साम्राज्यवादी घेरेबंदी की चेतावनी दी थी.

हम साम्राज्यवाद्-विरोध के तमाम प्रतिक्रियावादी स्वरूपों का विरोध करते हैं, चाहे यह स्वरुप धार्मिक मूलतत्ववादी हो, संकीर्ण राष्ट्रवादी हो अथवा सैनिक-लोकवादी हो. हमने 1991 के पहला इराक युद्ध का विरोध किया था, साथ ही कुर्दिस लोगों की स्वतंत्रता आन्दोलन का समर्थन. 1990 के दशक में एक बहुजातीय समाज के लिए बोस्निया-हेर्ज़ेगोविना के संघर्ष का हमने समर्थन किया था, उस समय जब सर्बिया में नरसंहार चल रहा था. वैश्विक पूंजीवाद के भीतर चियापास में जारी संघर्ष एवं साथ ही कोसोवो में जारी स्वतंत्रता आन्दोलन का भी हमने समर्थन किया है. सितम्बर 11, 2011 के हमले के बाद से अमेरिका के 'निरंतर युद्ध'(permanent war) के सिद्धांत का हमने विरोध किया है, साथ ही ईराकी, ईरानी एवं अफगानी स्त्रियों का युद्ध विरोधी एवं उनकी आज़ादी की लड़ाई का समर्थन किया है. हमने इजराइल के अस्तित्व को मान्यता देते हुए फिलिस्तीन के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का समर्थन किया है, इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए कि राष्ट्र के आत्म-अधिकार के सवाल पर दोनों एक ही जमीन पर दावा कर रहे हैं.

इस पूंजीवादी, नस्लवादी, लिंगभेदवादी, समलिंगी-सम्बन्ध विरोधी समाज में हम क्रांतिकारी ताकतों के बीच मजबूत से मजबूत एकता प्रस्थापित करने का प्रयास करते हैं, जो प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में हैं, जैसे कि आम मजदूरों के बीच,काले लोगों के बीच,लातिनों एवं अन्य उत्पीडित अल्पसंख्यकों के बीच, मूलनिवासियों के बीच; इसके अलावा- स्त्री, स्त्री-समलैंगिक, उभयलिंगी, ट्रांस-जेंडर एवं युवकों के बीच.

अमेरिका, अफ्रीका एवं यूरोप की अश्वेत जनता (Blacks) को एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि वे मुक्ति-संघर्ष में हमेशा पहली कतारों में रहें हैं - यूरोप एवं अमेरिका के शुरुआती गुलामी-विरोधी संघर्षों से लेकर आज के नागरिक अधिकार तथा नस्ल-विरोधी आन्दोलनों तक. पश्चिमी सभ्यता की दुखती रग अर्थात नस्लवाद को चुनौती देकर इस अश्वेत-आयाम (The black dimension) ने अपने आप को विश्व के कई हिस्सों में मुक्ति संघर्षों के अग्रदूत के रूप में प्रस्थापित किया है. हम सम्पूर्ण विश्व के उत्पीडित अल्पसंख्यकों का भी

समर्थन करते हैं, एवं आप्रवासी विरोधी नेतागिरी से लेकर इस्लामातांक एवं येहुदी-विरोधी भावनाओं तक तमाम किस्म के जातीय-धार्मिक भेद भाव का विरोध करते हैं.

स्त्री-मुक्ति एक अन्यतम महान अंतरराष्ट्रीय ऐतिहासिक आन्दोलन है. आधुनिक युग में पूंजी के द्वारा मजदूरों का अमानवीयकरण --पितृसत्तात्मक ताकतों के द्वारा स्त्रियों के अमानवीयकरण के साथ-साथ होता है. स्त्री-मुक्ति आन्दोलन ने न केवल वर्तमान समाज में बल्कि वामपंथियों के बीच भी लिंगभेद को चुनौती दी है, मुक्ति के लिए स्त्रियों का संघर्ष दर्शाता है कि नारीवाद नई पीढ़ी के लिए अपने आप को पुनर्जीवित कर रही है, न केवल एक शक्ति के रूप में बल्कि विवेक-बुद्धि के रूप में भी.

युवा-शक्ति (Youth) क्रांतिकारी रूपांतरण के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्त्रोत है, क्योंकि मौजूदा समाज के विरोध में उनका आदर्शवाद उन्हें नए समाज के निर्माण कार्य में अन्य क्रांतिकारी सामाजिक शक्तियों के साथ खड़ा कर देता है.

यह तमाम सचेतन शक्तियां जिनकी क्रांतिकारी सम्भावनायें उनके एकीकरण में होती हैं - पूंजी के वर्चस्व के खिलाफ महत्वपूर्ण चुनौती खड़ी करती हैं- विशेष तौर पर उस समय जब वे अपने संघर्षों को दिशा देने के लिए 'मुक्ति के दर्शन' (Philosophy of Liberation) को अपनाते हैं.

इसके विपरीत अन्य धाराएँ, जैसे उत्तर-अधुनिकतावाद (post-modernism) एवं व्यवहारवाद (pragmatism) जो हर तरह के एकतावादी दर्शन को ख़ारिज करती है, विश्व-पूंजीवादी व्यवस्था की वास्तविकता को चुनौती नहीं दे सकती. लेकिन इन विकल्पों का पर्याप्त जवाब मार्क्स-पश्चात मार्क्सवाद(Post Marx Marxism) के उन स्वरूपों से नहीं दिया जा सकता, जो प्रक्रियाओं की विशेषताएँ एवं भिन्नताओं को छोड़ देती हैं अथवा नजरअंदाज करती हैं. नए मानवीय सम्बन्ध, जिन्हें मार्क्स ने 1844 में "सम्पूर्ण रूप से प्रकृतिवाद अथवा मानववाद" के रूप में चिन्हित किया था, को तभी हासिल किया जा सकता है जब हमारे समय के लिए मार्क्स के मार्क्सवाद को 'निरंतर क्रान्ति' के एक द्वंदात्मक-आलोचनात्मक संकल्पना के रूप में हम फिर से विश्लेषित करें, विकसित करें एवं एक ठोस रूप दें. इस सृजनात्मक द्वंदवाद के लिए आवश्यक है कि हम यह स्पष्ट करें कि हम किन चीजों के पक्ष में हैं एवं हमारा सकारात्मक मानववादी दर्शन क्या है, न कि केवलमात्र पूंजीवादी

व्यवस्था को अस्वीकार करते हुए इसका विरोध करें, जिस अस्वीकार में "नकार के भीतर सकार"(positive in the negative) के द्वंदवाद (dialectics) का अभाव है.

आजादी के लिए लड़े जाने वाले सभी आन्दोलनों एवं संगठनों में भाग लेना हमारा लक्ष्य है. क्रांतिकारी संघर्ष एवं नए समाज के निर्माण के लिए हम हर तरह के संभ्रांत-वादी, अगुआ-दस्ता पार्टी-स्वरुप के संगठन को ख़ारिज करते हैं. साथ ही हम स्वीकार करते हैं कि हमारा समिति-स्वरुप (committee form) का संगठन सभी आन्दोलनों के लिए मॉडल नहीं हो सकता, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्वरुप का संगठन है, जिसे तमाम आन्दोलनों ने लगातार स्वीकार किया है, जैसा कि अरब स्प्रिंग (Arab Spring) एवं वाल-स्ट्रीट दखल (Occupy Wall Street) आन्दोलन.

साथ ही हमारी मान्यता है कि तमाम क्रांतिकारी गुटों ने (जिनमें हम भी शामिल हैं) जिस विकेंद्रीकृत स्वरुप के संगठन को अपनाया है, वह तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि यह द्वंद्वात्मक दर्शन से अलग है. हम यह मानते हैं कि 1953 में लिखी राया दुनायेव्स्काया की "हेगेल के परमतत्व पर पत्र"(letter on Hegel's Absolutes) एवं उनकी असमाप्त किताब "संगठन एवं दर्शन की द्वंद्वात्मकता "(Dialectics of Organization and Philosophy) के लिए लिखी नोट्स हमारे जीवन एवं समय में महत्वपूर्ण दिशा देता है, ताकि हम दर्शन व संगठन की एकता को साकार रूप दे सकें.

दुनेव्स्काया का "क्रांति त्रयी"---***मार्क्सवाद एवं स्वतंत्रता, 1776 से आज तक (1958), दर्शन तथा क्रांति: हीगेल से सार्त्र तक तथा मार्क्स से माओ तक (1973)***,*एवं* ***रोज़ा लक्समबर्ग, स्त्री मुक्ति तथा मार्क्स की क्रांति का दर्शन (1982)***----साथ ही ***अमेरिकी सभ्यता का इम्तहान:अगुआ दस्ता के रूप में अश्वेत जनता (1983)*** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मार्क्सवादी-मानववाद के दार्शनिक विषयवस्तु की व्याख्या करता है. ***मार्क्सवाद एवं स्वतंत्रता उन*** आन्दोलनों पर आधारित है जो व्यवहार से सिद्धांत की ओर निर्देशित है एवं स्वयं सिद्धांत के स्वरुप हैं. इस पुस्तक ने मार्क्सवाद को अपने मूल रूप में एक "सम्पूर्ण प्रकृतिवाद अथवा मानववाद" के रूप में 1844 से ***पूंजी*** तक पुनर्स्थापित किया है. ***दर्शन एवं क्रांति*** ने ऐतिहासिक रूप में दर्शन एवं क्रांति की एकात्मता को दर्शाया है एवं एक मुक्ति के दर्शन के लिए उस सरगर्मी को उजागर किया है जो हमारे काल की विशेषता है.उसी तरह ***रोजा लक्समबर्ग, स्त्री-मुक्ति एवं मार्क्स की क्रांति का दर्शन*** विकासशील देशों में क्रांति के नये रास्ते एवं स्त्री-पुरुष संबंधों के महत्व को उजागर किया है.

सर्वाधिक महत्वपूर्ण---लेनिन, लक्समबर्ग एवं ट्रोट्स्की जैसे महत्वपूर्ण मार्क्स-पश्चात मार्क्स-वादिओं के योगदान एवं कमजोरिओं का पुनर्मूल्यांकन करते हुए इस किताब ने स्वयं-स्फूर्ति, संगठन एवं दर्शन के आपसी संबंधों के पुन: परीक्षण की मांग की है.

ये तमाम कृतियाँ इस महत्वपूर्ण सवाल को उठाते हैं, जो आज हमारे सम्मुख है : पिछले 100 साल के अनेक असफल एवं असमाप्त क्रांतियों को देखते हुए, क्या मानवजाति आज़ादी (Freedom) हासिल कर पायेगा?

इस सवाल का जवाब हाँ में देते हुए अन्तरराष्ट्रीय मार्क्सवादी मानववादी के सदस्यों ने 1987 में दुनायेव्स्काया के मृत्यु के बाद उनके किताबों का प्रकाशन जारी रखा है एवं **निषेध की शक्ति : मार्क्स एवं हीगेल में द्वंदवाद पर राया दुनेव्स्काया की निर्वाचित लेख** को प्रकाशित किया है. इसके आलावा हमारे सदस्यों ने राया **दुनायेव्स्काया की संकलित रचनाओं** में एक और खंड जोड़ा है.

अंतर-राष्ट्रीय मार्क्सवादी-मानववादी संगठन (IMHO) इस विचार-सरणी को हमारे समय के लिए और अधिक ठोस स्वरुप में विकसित करने का लक्ष्य अपने सामने रखती है.

हमारे इस सफ़र में जो भी शामिल होना चाहेंगे उन्हें इन सिद्धांतों से सहमत होना आवश्यक है. उन्हें उन निर्णयों का पालन करना होगा जो स्वतंत्र एवं खुली चर्चा के जरिये बहुमत के वोटों से पारित किया गया है. जो लोग सदस्य नहीं हैं लेकिन हमारी गतिविधिओं में शामिल होने के लिए इच्छुक हैं एवं हमारे प्रकाशनों में लेख प्रस्तुत करना चाहते हैं उनका भी हम स्वागत करते हैं.

सदस्यों के लिए नियमावली एवं जिम्मेदारियां

१)अंतर-राष्ट्रीय मार्क्सवादी-मानववादी संगठन के सभी सदस्य संगठन के सर्वोच्य निर्णयकारी अंग होंगे.

२) IMHO से सम्बंधित सभी निर्णय सदस्यों के वोट से लिया जायेगा, जो बहुमत के निर्णय के सिद्धांत पर आधारित होगा.

३) स्वतंत्र रूप से संलग्न व्यक्तिओं में सदस्यता एक विशेषाधिकार है. स्वीकृत सदस्यता बहुमत से लिए गए निर्णयों को लागू करने की जिम्मेदारियों को स्वीकारना है.

४) हर दो साल में कम से कम एक बार IMHO का सम्मेलन होगा, जिसमें हर सदस्य को आमंत्रित किया जायेगा. इस सम्मेलन में किसी भी सदस्य को प्रस्ताव, संवैधानिक बदलाव अथवा चर्चा के लिए विषय प्रस्तुत करने का अधिकार है. सम्मेलन में जो भी निर्णय लिए जायेंगे वह बहुमत के सिद्धांत के आधार पर लिए जायेंगे. सम्मेलन में लिए गए निर्णय सभी सदस्यों पर अनिवार्य रूप से लागू होंगे.

५) संगठन के सदस्य गुप्त वोट के जरिये एक संचालन समिती (steering committee) का चुनाव करेंगे. सम्मेलन के बाहर यह संचालन समिती IMHO की समन्वय निकाय (Coordinating Body) के स्वरुप में कार्यरत रहेगी. सम्मेलन के शुरू में ही संचालन समिति को भंग कर दिया जायेगा एवं एक नई संचालन समिती का चुनाव सम्मेलन के अंत में होगा.संचालन समिति हमेशा विषम संख्या से बनी होगी अर्थात कम से कम तीन, अधिक से अधिक सात, जो कम से कम दो देशों से आते हैं. संचालन समिति की बैठक महीने में कम से कम एक बार होगी एवं इस बैठक का विवरण (minutes) रखा जायेगा जो सभी सदस्यों को उपलब्ध होगा.

६) संचालन-समिति सम्मेलन के तारीखों से कम से कम 90 दिन पहले सम्मेलन का आह्वान करेगी. चर्चा के विषय एवं प्रस्ताव सदस्यों को सम्मेलन के 30 दिन पहले भेज दिया जायेगा ताकि सदस्य चर्चा में पूरी तरह शामिल हो सकें. सम्मेलन बुलाने के तारीख तक मौजूद सभी सदस्यों को सम्मेलन में वक्तव्य रखने एवं वोट देने का पूरा अधिकार होगा.

७) संगठन के दो-तिहाई सदस्य किसी भी वक्त विशेष सम्मेलन बुला सकते हैं जो विशेष सम्मेलन के नियमों के मुताबिक संचालित होगा.

८) जो भी व्यक्ति IMHO का सदस्य बनना चाहता है, उसे संचालन समिति के पास लिखित रूप में आवेदन करना पड़ेगा. संचालन समिति इस आवेदन को IMHO के सम्पूर्ण सदस्यों के सम्मुख वोट के लिए प्रस्तुत करेगी, जो बहुमत के सिद्धांत पर आधारित है. कोई गुट अथवा संगठन IMHO के साथ सम्मिलित होना चाहता है तो उनके सदस्यों को पहले व्यक्ति के रूप में वोटिंग के माध्यम से IMHO की सदस्यता लेनी होगी.

९)यह संभव है कि कोई सदस्य अथवा सदस्यों का ग्रुप IMHO के सम्मेलन में पारित अवस्थिति से भिन्न दृष्टिकोण अपनाएं एवं IMHO के अवस्थिति अथवा दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहें. इस परिस्थिति में वे अपने दृष्टिकोण को खुले रूप में रखने के लिए स्वतंत्र हैं. अपने भिन्न दृष्टिकोण को खुले रूप में रखते वक्त यह आवश्यक है कि वे इस बात को स्पष्ट करें कि उनका दृष्टिकोण संगठन से भिन्न है. साथ ही संगठन के दृष्टिकोण को वे खुद अथवा कोई और सदस्य सही तरीके से प्रस्तुत करे.

१०)सदस्यों की जिम्मेदारी है कि वे IMHO के काम में सक्रिय रूप में -अपनी काबिलियत के मुताबिक शारीरिक एवं मानसिक रूप से हिस्सा लेते हुए सम्मिलित हों. साथ ही उनकी जिम्मेदारी है कि संगठन की निर्वाचित संचालन समिति की ओर से प्राप्त सूचनाओं का समय पर उत्तर दें.

११) किसी शहर अथवा स्थानीय समिति के सदस्य गैर-सदस्यों को चर्चा के लिए आमंत्रित कर सकते हैं. साथ ही उन लोगों को इन चर्चाओं से दूर रख सकते हैं जिनकी वजह से संगठन को नुकसान हो सकता है.

१२)उस स्थिति में जब कोई सदस्य IMHO के आलावा किसी अन्य संगठन का सदस्य हो, यह देखना आवश्यक है कि अन्य संगठन में उनकी सदस्यता एवं IMHO में उनकी सदस्यता के बीच हित-संबंधों का टकराव न हो.

१३)हर सदस्य से यह अपेक्षित है कि वह अंदरूनी सूचनाओ की गोपनीयता का सम्मान करे.

१४)रोजगार कमाने वाला हर सदस्य सप्ताह में कम से कम $5 का योगदान देंगे. छात्र, बेरोजगार एवं इनके समतुल्य स्थिति वाले सदस्य $1 का योगदान देंगे.

१५) IMHO के सदस्य एक व्यक्ति के रूप में वोटिंग करेंगे. IMHO के सदस्यों का औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप में बना हुआ किसी ग्रुप के लिए यह अपेक्षित नहीं है कि वह एक ग्रुप के रूप में वोट डालें.

१६)ऐसे सदस्यों को IMHO से निष्कासित किया जा सकता है, जो वर्ग-समझौता, लिंगभेद अथवा समलिंगियों तथा अश्वेतों के प्रति दुराग्रह के दोषी पाए जाते हैं. अगर सदस्य के खिलाफ कोई आरोप है तो उसे IMHO के बैठक के कम से कम 72 घंटे पहले विस्तृत रूप में लिखित आरोप-पत्र दिया जायेगा. आरोप लगे सदस्य को संचालन समिति के सामने अपने पक्ष में बचाव करने के लिए पूरा मौका दिया

जायेगा. संचालन समिति के सामने अथवा अगले सम्मेलन में अपील करने का अधिकार भी उसे होगा.

१७) सदस्यता के दायित्वों को न निभाने की वजह से, जैसे कि संगठन को खड़ा करने के काम से मुकरना, निर्वाचित निकायों की ओर से सांगठनिक सूचनाओं का उत्तर न देना अथवा अपने देय राशी को न देने से उनकी सदस्यता ख़ारिज कर दी जायेगी.

१८) ऐसे पूर्व-सदस्य जिनकी सदस्यता ख़ारिज कर दी गई है अथवा जिन्हें निष्कासित किया गया है, अगर फिर से सदस्यता का आवेदन करना चाहते हैं तो उन्हें तीन महीने के संतोषजनक प्रविक्षा-अवधी (probationary period) के बाद ही सदस्य के रूप में स्वीकार किया जायेगा.

१९)इस संविधान को बदलने अथवा इसमें संशोधन करने के लिए सदस्यों की दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी.

.....1 मार्च, 2013 में पारित